International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 11-04-2023, Accepted: 26-04-2023, Published: 11-05-2023
Volume 9, Issue 3, 2023, Page No. 13-15

रवीन्द्रनाथ त्यागी के साहित्य में आर्थिक व्यंग्य का स्वरूप

रिंकु कुमारी राजभर
शोधार्थी, हिन्दी विभाग, वर्द्धमान विश्वविद्यालय, पश्चिम बंगाल, भारत

सारांश
स्वतंत्रता के पश्चात् औद्योगिकरण, नगरीकरण आदि का विकास हुआ, किन्तु आर्थिक विषमता संबंधित समस्याएँ भी बढ़ी है। आज परोक्ष रूप से देश की सारी अर्थव्यवस्था राजनीति से जुड़ी है। राजनीतिक तथा प्रशासनिक विषमताओं के परिणामस्वरूप आर्थिक विसंगतियाँ अर्थ के असमान वितरण के कारण होती है। नेता चुनाव में जितना खर्च करता है उससे कई गुना अधिक सत्ता में आने के पश्चात् अपना स्वार्थ साध लेता है। प्रशासकीय अधिकारी भी इस तरीके को अपनाते हुए ऐसी योजनाएँ बनाते हैं। जिससे उनको अधिक लाभ होता है। रवीन्द्रनाथ त्यागी के साहित्य में आर्थिक विसंगतियों से संबंधित इसी तरह की अनेक समस्याओं पर प्रहार किया गया है।

मूल शब्दः दरिद्रता, महँगाई, बेरोजगारी, अमीरी एवं गरीबी, आर्थिक शोषण

आज के समय में अर्थ की महत्वपूर्ण भूमिका है, क्योंकि अर्थ पर ही मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन टिका हुआ है। आज के समाज में अर्थ से ही मनुष्य की सही पहचान होती है। अर्थ ही मनुष्य को अमीर और गरीब की संज्ञा देता है। आज वही शक्तिशाली है जिनके पास अत्यधिक धन है क्योंकि आज धन ने सारी शक्तियों को अपने में समाहित कर लिया है। क्योंकि आज धन मानव समाज का सबसे बड़ा आधार है। जिसके बल पर मनुष्य कुछ भी खरीद सकता है। समाज की सम्पूर्ण जीवन प्रक्रिया आज अर्थ पर ही निर्धारित है। लेकिन अर्थ के अभाव के कारण समाज का सम्पूर्ण ढाँचा टूट जाता है। आर्थिक स्थिति पर ही समाज के स्वरूप का निर्माण आधारित होता है। वर्तमान समय में अर्थ ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों को प्रभावित किया है।

आज आर्थिक रूप से महंगाई, जमाखोरी, करो की चोरी, कालाबाजारी आदि समस्याएँ देश को खोखला कर रही हैं। जिसके कारण देश में अन्न की कमी, रिश्वतखोरी, बेरोजगारी और स्मगलिंग की समस्याएँ बढ़ती ही गयी है। पूँजीपति और व्यापारी वर्ग चुनाव में भारी मात्रा में धन देकर राजनेताओं की आर्थिक सहायता सिर्फ अपना स्वार्थ साधने हेतु करते हैं। राजनेताओं के संरक्षण में रहने वाले पूँजीपति, व्यापारी और प्रशासनिक अधिकारियों ने देश की आर्थिक स्थिति को पूर्ण रूप से खोखला कर दिया है। देश की आर्थिक स्थिति इन राजनेताओं के दुष्कर्मों के कारण निरन्तर बिगड़ती ही गयी है। इस संदर्भ में रवीन्द्रनाथ त्यागी जी लिखते हैं कि–''अगर मेरी तनख्वाह बढ़ती है तो मेरे लिए देश प्रगति कर रहा है। कुछ विशेषज्ञों का कहना है कि आजादी के बाद देश की प्रगति के लिए अरबों रूपए लगाए गए मगर भ्रष्टाचार, अपव्यय बढ़ती हुई जनसंख्या और महंगाई के कारण देश उतना आगे नहीं बढ़ा जितनी उससे अपेक्षा थी। मैं विशेषज्ञों से एकदम असहमत हूँ। मेरे विचार से भ्रष्टाचार और अपव्यय हर देश में होता है। महँगाई जो है आर्थिक प्रगति की सूचक है।''[1]

स्पष्टतः यहाँ त्यागी जी ने, अमीरी एवं गरीबी, दरिद्रता, महँगाई, बेरोजगारी, आर्थिक शोषण, आर्थिक विषमता जैसी समस्याओं को अपनी रचनाओं के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

तथ्य विश्लेषण

त्यागी जी की रचनाओं में प्रस्तुत आर्थिक विसंगतियों की विविध पक्षों को हम निम्न बिन्दुओं में विवेचित कर सकते हैं।

आर्थिक विषमता

त्यागी जी ने आर्थिक विषमता की स्थिति की चर्चा करते हुए समाज में गरीब और अमीर के बीच बनी रेखा की स्थितियों पर प्रकाश डाला है। एक ओर अमीर दिन पर दिन धनवान होता जा रहा है, तो वही दूसरी तरफ गरीब की स्थिति बद से बदत्तर होती जा रही है। अमीर महलों में ऐशों आराम के साथ जीवन व्यतित करते हैं और गरीब अपनी टूटी–फूटी झोपड़ी में रहकर भूख से बेहाल होकर अपना जीवन व्यतित कर रहा है। आजादी के पूर्व देशों में आर्थिक विषमता की जो स्थिति थी आजादी के पश्चात् भी उसमें कोई विशेष परिवर्तन नहीं हुआ है। इस संदर्भ में रवीन्द्रनाथ त्यागी जी ''मैं आज़ाद हूँ'' नामक रचना में व्यंग्य की अभिव्यक्ति देते हुए लिखते हैं कि – ''आप हम सब बराबर है। जो मुर्गे खाते हैं वह भी आज़ाद है और जो दलिया खाता है वह भी आज़ाद है। वह जो कोठी में रहता है वह भी आज़ाद है और जो फुटपाथ पर सोता है वह और भी ज्यादा आज़ाद है। जो लट्ठे के थान छिपाता है वह भी आज़ाद है और जो चिथड़े पहिने धूमता है वह भी आज़ाद है।''[2]

स्पष्टतः हम कह सकते हैं कि समाज में आर्थिक विषमता इस कदर बढ़ चुकी है कि अमीर और गरीब के बीच की रेखा को मिटा पाना नामुमकिन सा दृष्टिगत होता है। इसी संदर्भ में 'गरीब होने के फायदे' नामक रचना में व्यंग्य की अभिव्यंजना करते हुए त्यागी जी लिखते हैं कि–''अमीर आदमी चंदन की चिता में जलता है तो गरीब आदमी लकड़ी के महँगे होने के कारण आजकल प्रायः नदी में बहा दिया जाता है, जिसे कुछ विशेषज्ञ 'जल समाधि' के नाम से पुकारते हैं।''[3]

अमीर सुख–साधनों में अपना जीवन व्यतित करते हैं और मरने के पश्चात् उनका दाह संस्कार भी बड़े शान से किया जाता है वही गरीबों की स्थिति पहले से ही दयनीय होती है मरणोपरान्त उनकी स्थिति एक लवारिस लाश की तरह होती है जिसे नदी में बहा दिया जाता है।

'सारे जहाँ से अच्छा' नामक रचना में व्यंग्य की योजना करते हुए त्यागी जी लिखते हैं कि–''हिन्दुस्तान जैसा दिलचस्प मुल्क और कहाँ मिलेगा? एक ओर समुद्र और दूसरी और पहाड़–एक ओर भयंकर भुखमरी और दूसरी ओर ऐसी दावतें जिनमें मुर्गा शराब में पकाया जाता है–कहाँ देखने को मिलेगा?''[4] स्पष्टतः हम कह सकते हैं कि एक तरफ पूँजीपति वर्ग दावतों में सिर्फ अपना जीवन बिताते हैं वहीं गरीब वर्ग भूखमरी के कारण अपना दम तोड़ते नजर आते हैं। त्यागी जी ने यहाँ हिन्दुस्तान की सच्ची तस्वीर को दिखाने का प्रयास किया है।

'जी हाँ हुजूर, मैं जिस्म बेचता हूँ', शीर्षक रचना में आर्थिक विषमता के संदर्भ में त्यागी जी लिखते हैं कि–''एक इंसान है जो पिछले पाँच वर्ष में मात्र एक सौ बीस बार खुन बेच चुका है। दलाल का कमीशन काटकर उसे प्रत्येक रक्त–दान पर सौ रुपये की विपुल राशि प्राप्त होती है। जो और भी भाग्यवान लोग हैं ये अपने बच्चे तक बेचते हैं और कभी–कभी तो स्थिति इतनी भयानक हो जाती है कि पत्नी को विवश होकर वह भी करना पड़ता है जो जीते जी कभी नही करना चाहती थी।''[5]

आज देश भर में गरीबी का ताण्डव सर्वत्र हो रहा है। नेता चुनावी दौर खत्म होने के पश्चात् गरीबों से किए गये वादों को भूल जाते हैं। उन्हें गरीबों की गरीबी से कोई सहानुभूति नही रहती है। गरीबी तो मात्र उनके वोट का जरिया है जिसे वे कभी भी खत्म करना नही चाहते। गरीबी हटाना तो मात्र एक नारा बन कर रह गया है आर्थिक तंगी के कारण भूख से बेहाल गरीब कुछ भी करने के लिए तत्पर रहता है। भूख की विवश्ता इस कदर बढ़ जाती है गरीब व्यक्ति अपने बच्चों तथा पत्नी तक को बेचने के लिए तैयार हो जाता है।

इस प्रकार हम कहते हैं कि भारत को कभी सोने की चिड़िया कहा जाता था, जहाँ दूध की नदियाँ बहती थी आज वहाँ की जनता गरीबी के कारण भूख से हर रोज अपना दम तोड़ती है, यह कैसी विडम्बना है? आज भी देश में धन की कमी नही है लेकिन वर्तमान समय में अमीरों की तिजोरियों में ही सारा धन संचित है। जिसके कारण अमीर हमेशा अमीर ही रहता है, वही गरीब कभी अमीर नही बन सकता क्योंकि देश के संचित धन पर अधिकार इन पूँजीपतियों का ही रहा है।

बेरोजगारी

आज समाज में आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था की असफलता का परिणाम बेरोजगारी है। इस बेरोजगारी के नागपाश में जकड़ा शिक्षित समुदाय यंत्रणाएँ भोग रहा है। राजनीतिक नेताओं के पास बेरोजगारी को दूर करने का नारा देने के अतिरिक्त कोई ऐसी योजना नही है जिससे देश की युवा शक्ति का विकास हो सके। इस विडम्बनापूर्ण स्थिति के लिए जिम्मेदार राजनेताओं पर त्यागी जी ने जमकर प्रहार किया है। आधुनिक युग में अहंवादी मनोवृत्ति के कारण शिक्षित युवावर्ग परिस्थितियों से समझौता करने को भी तैयार नही है। आज बेरोजगारी की समस्याओं से हमारा युवावर्ग कुंठाग्रस्थ है। अपने सुखद भविष्य की कल्पना कर युवा वर्ग दिन–रात मेहनत करके पढ़ता है। लेकिन रोजगार की लम्बी पंक्ति को देखकर उसके मन में निराशा का भाव व्याप्त हो जाता है। उसके सारे सपने टूट जाते हैं।

देश में बेकारी की समस्या आर्थिक विषमता के कारण निरन्तर बढ़ती ही जा रही है। नवयुवकों को पर्याप्त शिक्षा ग्रहण करने के पश्चात् भी रोजगार नहीं मिल पाता है। बेरोजगार होने के कारण पारिवारिक जीवन भी असंतोष तथा कलेशयुक्त हो रहा है। इस बेरोजगारी की विकृति पर रवीन्द्रनाथ त्यागी जी ने तीखा आघात किया है।

महँगाई

वर्तमान युग में महँगाई की समस्या के प्रकोप से कोई वर्ग अछूता नहीं रहा है। आज महँगाई राष्ट्र की विकट समस्या है। त्यागी जी 'सर्व प्रिय चारूतंर वसन्ते' नामक रचना में बढ़ती हुई महँगाई पर मीठी चुटकियाँ लेते हुए लिखते हैं कि–''कपड़े के दाम इतने बढ़ गए हैं कि लुंगी के अतिरिक्त और कुछ पहिनने की मेरी हिम्मत ही नही रही। यदि ये दाम इसी प्रकार बढ़ते रहे तो वह दिन भी दूर नही होगा जब कि मैं तुम्हारा स्वागत नंगे होकर किया करूँगा।''[6]

स्पष्टतः हम कह सकते हैं कि इस महँगाई की समस्या के कारण सामान्य वर्ग अपने जीवन को सुविधापूर्ण रूप से नही जी सकता है। महँगाई के गंभीर परिणामों को 'देश–विदेश की कथा' नामक रचना में व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति देते हुए त्यागी जी लिखते हैं कि–''महँगाई यदि इसी तरह बढ़ती गयी तो एक दो वर्ष में ही यह नौबत आ जाएगी कि खाने के लिए लोग रोटी तो क्या जहर तक नहीं खरीद सकेंगे और मुर्दों को जलाने के बजाए पवित्र पुष्यसलिला भगवती भागीरथी में बहा दिये जाया करेंगे।''[7]

स्पष्टतः यहाँ त्यागी जी ने महँगाई से बढ़ती समस्याओं के यथार्थ स्थिति का अंकन किया है।

कालाबाजारी

हमारे देश मे कालाबाजारी की समस्या घातक बन गयी है। इस समस्या पर प्रशासन व जनता द्वारा कोई ठोस कार्यवाही नही हो पा रही है। अतः इस कारण देश के गौरव को बनाए रखने में बाधा उत्पन्न होती है। इस संदर्भ में 'काले धन का शास्त्रीय विवेचन' नामक रचना में त्यागी जी व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति देते हुए लिखते हैं कि–''काला धन प्रायः धनी व्यक्तियों के ही पास होता है क्योंकि शेष जनता पर तो किसी रंग का भी धन नही होता। धनी लोग कुबेर के पुत्र हैं। पुराणों के अनुसार कुबेर श्वेतवर्ण के थे और शुभ्र वस्त्र पहनते थे। आजकल के पूँजीपतियों की भाँति उनकी तोंद काफी आगे निकली हुई थी। जहाँ कहीं वे जाते थे वहाँ उनकी तोंद उनसे कुछ पल पहले ही पहुँचती थी। पूँजीपतियों का यह मॉडल आज तक उसी तरह चला आ रहा है। कुबेर के तीन चरण थे और हाथ में गदा रहती थी। आज के संदर्भ में तीसरा चरण इम्पाला गाड़ी का प्रतीक माना जा सकता है। गदा का अर्थ गुंडो से। आमतौर से काले धन वाले सफेद पोशचन्द गुंडे नियमित रूप से पाले रहते हैं।''[8]

स्पष्टतः यहाँ पूँजीपतियों द्वारा गलत तरीके से देश का धन लूटने की प्रवृत्ति पर कटाक्ष किया गया है। मार्क्स के कथन का उदाहरण देते हुए रवीन्द्रनाथ त्यागी जी लिखते हैं कि–''मार्क्स के अनुसार राजनीति जो निश्चित होती है वह अर्थशास्त्र से ही होती है। इसी कारण विधायक जो खरीदे जाते हैं वे काले धन से ही खरीदे जाते हैं।''[9]

स्पष्टतः हम देखते हैं कि कालाबाजारी के कारण देश की स्थिति बद से बदत्तर होती जा रही है। आज समाज में कालाबाजारी इस कदर व्याप्त हो गयी है कि उस पर नियंत्रण कायम रखना असंभव सा हो गया है।

रिश्वतखोरी

आज समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपने पद एवं रूतवे के माध्यम से अपनी स्थिति को सुधारने के लिए रिश्वतखोरी का सहारा अपनाता है। आज भ्रष्टाचार की चपेट में आकार पूरा विश्व कुलबुलाता हुआ नज़र आता है। इस भ्रष्टाचार में रिश्वतखोरी का अपना अलग ही महत्व है। वर्तमान समय में रिश्वतरूपी देवता के उपासक नेता से लेकर प्रशासनिक विभाग के चपरासी तक भी है। आज प्रशासन में साधारण से साधारण काम बिना घूस दिए नहीं होते हैं। 'क्लर्क' नामक रचना में रिश्वतखोरी के संदर्भ में त्यागी जी लिखते हैं कि–''यदि कोई गलत रकम चपरासी को दी जाती है तो वह बख्शीश कहलाती है, यदि किसी बाबू को दी जाती है तो दस्तूर कहलाती है, यदि किसी नेता को दी जाती है तो उसे पार्टी के लिए चंदा कहकर पुकारा जाता है और यदि वही रकम किसी अफसर को दी जाती है तो रिश्वत कहीं जाती है।''[10]

इस प्रकार त्यागी जी ने रिश्वत को कई नामों से संबोधित करते हुए कार्यालय में व्याप्त रिश्वतखोरी को उजागर करते हुए उस पर प्रहार किया है।

'बड़े साहब' नामक रचना में त्यागी जी व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति देते हुए लिखते हैं कि– ''एक साहब थे जो एक ओर तो बाबा विश्वनाथ की मूर्ति के सामने साष्टांग दंडवत लगाते थे और

दूसरी ओर ठेकेदारों से घूस लेते थे। वे भगवान की प्रार्थना संभवतः इसी कारण करते थे कि उनसे उन्हें ऐसा पद दिया जहाँ जी भकर रिश्वत ली जा सके।''[11]

स्पष्टतः यहाँ बड़े साहब पर व्यंग्य का निशाना साधा गया है जो एक ओर बाबा विश्वनाथ की मूर्ति के सामने झुकने का ढोंग करते हैं वहीं दूसरी तरफ ठेकेदारों से रिश्वत लेते थे, और भगवान की प्रार्थना सिर्फ अपने स्वार्थ साधने हेतु करते थे।

'पराजित पीढी के नाम' नामक रचना में त्यागी जी प्रशासनिक क्षेत्र के सभी विभागों पर व्यंग्य की अभिव्यक्ति देते हुए लिखते हैं कि–''सारा देश ही सब तरफ से खुलेआम लूटा जा रहा है और कोई कुछ नही कर सकता। अदालत का सब रजिस्ट्रार और सार्वजनिक निर्माण विभाग का ओवरसियर बेहद कम तनख्वाह पाते हैं पर उनकी बीबी हीरे की लौंग पहनती है।''[12]

आज हर प्रशासनिक क्षेत्र के हर विभाग में रिश्वत का बोलबाला है। रिश्वत के बिना कोई कार्य संभव नहीं हो पाता है। इसलिए लोग रिश्वत देकर अपना कार्य जल्दी करवाते हैं। इस तरह रिश्वत लेने और देने की परम्परा खूब फल–फूल रही है।

निष्कर्ष

हम कह सकते हैं कि त्यागी जी ने अपनी तीक्ष्ण और पैनी दृष्टि से आर्थिक विषमताओं के विविध स्वरूपों की खोज–खबर ली है। आर्थिक विषमता, बेरोजगारी, कालाबाजारी, रिश्वतखोरी आदि उनके हास्य–व्यंग्य के विषय बने हैं।

संदर्भ सूची

1. त्यागी, रवीन्द्रनाथ, पराजित पीढ़ी के नाम, पराग प्रकाशन, दिल्ली, प्र0 सं0–1988, पृ0 सं0–93
2. त्यागी, रवीन्द्रनाथ, आत्मलेख, नेशनल पब्लिशिंग हाउस नयी दिल्ली, प्र0 सं0–1988, पृ0 सं0–109
3. त्यागी, रवीन्द्रनाथ, भाद्रपद की साँझ, राजकमल प्रकशन, नयी दिल्ली, प्र0 सं0–1966, पृ0 सं0–134
4. त्यागी, रवीन्द्रनाथ, विषकन्या, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र0 सं0–1990, पृ0 सं0–70
5. त्यागी, रवीन्द्रनाथ, लाल पीले फूल, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र0 सं0–1977, पृ0 सं0–114
6. त्यागी, रवीन्द्रनाथ, लाल पीले फूल, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र0 सं0–1977, पृ0 सं0–09
7. त्यागी, रवीन्द्रनाथ, देश–विदेश की कथा, किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र0 सं0–1994, पृ0 सं0–147
8. त्यागी, रवीन्द्रनाथ, शोक सभा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, प्र0 सं0–1974, पृ0 सं0–59
9. त्यागी, रवीन्द्रनाथ, शोक सभा, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नयी दिल्ली, प्र0 सं0–1974, पृ0 सं0–60
10. त्यागी, रवीन्द्रनाथ, इस देश के लोग, पराग प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र0 सं0–1980, पृ0 सं0–40
11. त्यागी, रवीन्द्रनाथ, इस देश के लोग, पराग प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र0 सं0–1980, पृ0 सं0–52
12. त्यागी, रवीन्द्रनाथ, पराजित पीढ़ी के नाम, पराग प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्र0 सं0–1988, पृ0 सं0–03